Q No माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत (Malthusian Theory of Population)

Thomas Robert Malthus शास्त्रीय अर्थशास्त्र के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री तथा जनसंख्या वैज्ञानिक थे। उन्होंने वर्ष 1798 में प्रकाशित अपनी प्रसिद्ध पुस्तक An Essay on the Principle of Population में जनसंख्या सिद्धांत (Theory of Population) का प्रतिपादन किया। यह सिद्धांत अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र तथा जनसांख्यिकी के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

माल्थस ने यह बताया कि यदि जनसंख्या की वृद्धि पर नियंत्रण नहीं रखा गया, तो जनसंख्या खाद्य उत्पादन की तुलना में कहीं अधिक तेजी से बढ़ेगी। परिणामस्वरूप समाज में गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, कुपोषण, महामारी तथा सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न होंगी। उनके अनुसार प्रकृति स्वयं विभिन्न प्राकृतिक और सामाजिक साधनों द्वारा जनसंख्या को नियंत्रित करती है।

जनसंख्या सिद्धांत का अर्थ (Meaning of Population Theory)

जनसंख्या सिद्धांत का अर्थ यह बताना है कि किसी देश की जनसंख्या किस गति से बढ़ती है तथा उसका खाद्य उत्पादन और उपलब्ध संसाधनों पर क्या प्रभाव पड़ता है।

माल्थस का मुख्य उद्देश्य यह सिद्ध करना था कि जनसंख्या वृद्धि यदि अनियंत्रित रहे, तो वह आर्थिक विकास और सामाजिक कल्याण के लिए गंभीर चुनौती बन जाती है।

माल्थस के सिद्धांत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

18वीं शताब्दी के अंत में इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के कारण जनसंख्या तेजी से बढ़ रही थी। कृषि उत्पादन उस गति से नहीं बढ़ पा रहा था। परिणामस्वरूप खाद्यान्न की कमी, गरीबी और बेरोजगारी जैसी समस्याएँ बढ़ने लगीं। इन परिस्थितियों को देखकर माल्थस ने अपना जनसंख्या सिद्धांत प्रस्तुत किया।

उनका उद्देश्य यह चेतावनी देना था कि यदि जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण नहीं किया गया, तो भविष्य में गंभीर आर्थिक संकट उत्पन्न हो सकते हैं।

माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत की परिभाषा

माल्थस के अनुसार–

"जनसंख्या में वृद्धि की प्रवृत्ति खाद्य उत्पादन की तुलना में अधिक तीव्र होती है। यदि इस वृद्धि पर नियंत्रण न किया जाए, तो जनसंख्या उपलब्ध भोजन से अधिक हो जाएगी और समाज में निर्धनता तथा अकाल जैसी समस्याएँ उत्पन्न होंगी।"

माल्थस के सिद्धांत की आधारभूत मान्यताएँ (Assumptions)

- मनुष्य में प्रजनन की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है।
- जनसंख्या वृद्धि की प्राकृतिक प्रवृत्ति बहुत तेज होती है।
- भूमि सीमित है।
- कृषि में घटते प्रतिफल का नियम (Law of Diminishing Returns) लागू होता है।
- तकनीकी प्रगति बहुत धीमी होती है।
- खाद्य उत्पादन सीमित संसाधनों पर निर्भर करता है।
- यदि नियंत्रण न किया जाए तो जनसंख्या निरंतर बढ़ती रहती है।
- जीवन स्तर का संबंध भोजन की उपलब्धता से है।

माल्थस का मुख्य सिद्धांत

माल्थस ने कहा कि–

जनसंख्या ज्यामितीय अनुपात (Geometrical Progression – GP) में बढ़ती है।

खाद्य उत्पादन अंकगणितीय अनुपात (Arithmetic Progression – AP) में बढ़ता है।

जनसंख्या वृद्धि

2 → 4 → 8 → 16 → 32 → 64 → 128

खाद्य उत्पादन

2 → 4 → 6 → 8 → 10 → 12 → 14

इस प्रकार समय के साथ जनसंख्या और खाद्य उत्पादन के बीच का अंतर लगातार बढ़ता जाता है।

जनसंख्या और खाद्य उत्पादन के बीच असंतुलन

माल्थस के अनुसार जब जनसंख्या उपलब्ध भोजन से अधिक हो जाती है, तब–

खाद्यान्न की कमी होती है।

बेरोजगारी बढ़ती है।

मजदूरी घटती है।

निर्धनता बढ़ती है।

कुपोषण फैलता है।

अपराध बढ़ सकते हैं।

सामाजिक असंतोष उत्पन्न होता है।

जनसंख्या नियंत्रण के उपाय

माल्थस ने जनसंख्या नियंत्रण के दो प्रकार के उपाय बताए–

1. निवारक नियंत्रण (Preventive Checks)

ये वे उपाय हैं जिन्हें मनुष्य स्वयं अपनाकर जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित कर सकता है।

प्रमुख निवारक उपाय

देर से विवाह।

आत्मसंयम (Moral Restraint)।

ब्रह्मचर्य।

परिवार नियोजन की भावना।

जिम्मेदार अभिभावकत्व।

सीमित संतान की नीति।

माल्थस ने नैतिक आत्मसंयम को सबसे श्रेष्ठ उपाय माना।

2. प्राकृतिक या सकारात्मक नियंत्रण (Positive Checks)

यदि लोग स्वयं जनसंख्या को नियंत्रित नहीं करते, तो प्रकृति कठोर उपायों से जनसंख्या कम करती है।

प्रमुख प्राकृतिक नियंत्रण

अकाल (Famine)

महामारी (Epidemics)

युद्ध (War)

बाढ़

भूकंप

सूखा

प्राकृतिक आपदाएँ

कुपोषण

मृत्यु दर में वृद्धि

इन घटनाओं के कारण जनसंख्या घट जाती है।

माल्थस के सिद्धांत का चित्रात्मक स्पष्टीकरण

जनसंख्या (GP)

128

64

32

16

8

4

2

खाद्य उत्पादन (AP)

14

12

10

8

6

4

2

यह चित्र दर्शाता है कि समय के साथ जनसंख्या की वृद्धि खाद्य उत्पादन से अधिक हो जाती है।

माल्थस के सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएँ

- जनसंख्या वृद्धि पर बल।
- खाद्य उत्पादन की सीमाओं को स्वीकार करना।
- कृषि में घटते प्रतिफल के नियम का उपयोग।
- जनसंख्या नियंत्रण की आवश्यकता पर जोर।
- प्राकृतिक संसाधनों के सीमित होने की चेतावनी।
- आर्थिक विकास और जनसंख्या के संबंध की व्याख्या।

- माल्थस के सिद्धांत के गुण (Merits)
- जनसंख्या और संसाधनों के संबंध को स्पष्ट किया।
- खाद्य सुरक्षा के महत्व पर बल दिया।
- जनसंख्या नियंत्रण की आवश्यकता बताई।
- पर्यावरण संरक्षण के महत्व को अप्रत्यक्ष रूप से रेखांकित किया।
- विकासशील देशों की समस्याओं को समझने में सहायता मिलती है।
- सीमित संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग पर बल दिया।
- आधुनिक जनसंख्या नीति के निर्माण में प्रेरणा दी।
- परिवार नियोजन की आवश्यकता को समझाने में उपयोगी सिद्ध हुआ।
- सतत विकास (Sustainable Development) की अवधारणा से इसका संबंध देखा जा सकता है।
- जनसंख्या विस्फोट के संभावित दुष्परिणामों के प्रति समाज को सचेत किया।

माल्थस के सिद्धांत की आलोचनाएँ (Criticisms)

- तकनीकी प्रगति की उपेक्षा की गई।
- कृषि उत्पादन आधुनिक तकनीक से बहुत तेजी से बढ़ सकता है।
- परिवार नियोजन के आधुनिक साधनों का उल्लेख नहीं है।
- सभी देशों में जनसंख्या वृद्धि समान नहीं होती।
- शिक्षा और महिलाओं के सशक्तिकरण के प्रभाव को नहीं माना गया।
- खाद्य संकट केवल जनसंख्या के कारण नहीं, बल्कि वितरण की असमानता के कारण भी हो सकता है।
- कई विकसित देशों में आज जनसंख्या वृद्धि बहुत कम या नकारात्मक है।
- आधुनिक विज्ञान और चिकित्सा ने मृत्यु दर को कम किया और उत्पादन क्षमता बढ़ाई।
- यह सिद्धांत अत्यधिक निराशावादी माना जाता है।
- आर्थिक विकास के साथ जीवन स्तर और जन्म दर में परिवर्तन आता है, जिसकी पर्याप्त व्याख्या नहीं की गई।
- आधुनिक संदर्भ में माल्थस के सिद्धांत की प्रासंगिकता
- यद्यपि माल्थस की कई मान्यताएँ आज पूरी तरह लागू नहीं होतीं, फिर भी उनका सिद्धांत आज भी महत्वपूर्ण है क्योंकि–
- बढ़ती जनसंख्या संसाधनों पर दबाव डालती है।
- जल संकट, खाद्य सुरक्षा और पर्यावरणीय समस्याएँ आज भी गंभीर हैं।
- जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है।
- सतत विकास के लिए जनसंख्या और संसाधनों के बीच संतुलन आवश्यक है।
- परिवार नियोजन और जनसंख्या शिक्षा आज भी महत्वपूर्ण नीतियाँ हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत अर्थशास्त्र और जनसांख्यिकी के इतिहास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि यदि जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण नहीं रखा जाए, तो उपलब्ध संसाधन और खाद्य उत्पादन सभी लोगों की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाएँगे, जिससे गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी और सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। यद्यपि आधुनिक विज्ञान, तकनीकी प्रगति और कृषि विकास ने माल्थस की कई भविष्यवाणियों को सीमित कर दिया है, फिर भी संसाधनों के संतुलित उपयोग, जनसंख्या नियंत्रण और सतत विकास की दृष्टि से उनका सिद्धांत आज भी अत्यंत प्रासंगिक माना जाता है